

सं. शो.वि./जी. जी. एन./ 68-85/45859.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं जिन्दल डाईचैम इण्डस्ट्रीज प्रा. लि., गुडगांवा, के श्रमिक श्री ओम प्रकाश, श्रीवास्तव तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीदयोगिक विवाद है;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना चांछनीय समझते हैं;

इसलिये, अब, श्रीदयोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादप्रस्त या उससे सुमंगत या उससे संबन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुमंगत अथवा संबन्धित मामला है;

क्या श्री ओम प्रकाश श्रीवास्तव को सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

दिनांक 14 नवम्बर, 1985

सं. शो.वि./मिवानी/51-85/45932.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं (1) आयुक्त, हरियाणा राज्य परिवहन, चण्डीगढ़ (2) हरियाणा राज्य परिवहन, मिवानी, के श्रमिक श्री राम कुमार हैल्पर तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीदयोगिक विवाद है;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना चांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रीदयोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे सुमंगत या उससे संबन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुमंगत अथवा संबन्धित मामला है :—

क्या श्री राम कुमार हैल्पर को सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. शो.वि./रोहतक/193-85/45940.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं बनानी पैनर प्रा. लि., बहादुरगढ़, के श्रमिक श्री बाबू राम तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीदयोगिक विवाद है ;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना चांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रीदयोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ पठित सरकारी अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे सुमंगत या उससे संबन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुमंगत अथवा संबन्धित मामला है :—

क्या श्री बाबू राम को सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. शो.वि./रोहतक/191-85/45947.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं वैष्ण टैक्नीकल इंस्टीट्यूट, रोहतक, के श्रमिक श्री जगननाथ तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीदयोगिक विवाद है ;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना चांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रीदयोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे सुमंगत या उससे संबन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुमंगत अथवा संबन्धित मामला है :—

क्या श्री जगननाथ को सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?